Topic – MEANING AND DEFINITIONS OF SOCIAL CHANGE

(सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषाएँ)

Sol- परिवर्तन प्रकृति का नियम है और चूंकि समाज भी उसी प्रकृति का एक अंग है, इसू कारण सामाजिक परिवर्तन भी प्राकृतिक या स्वाभाविक है। समाज मानव-जीवन के प्रारंभ से ही मनुष्य के साथ है और तब से अब तक की अवधि में समाज या सामाजिक जीवन में उसके स्वरूप, संरचना व्यवस्था, संगठन, मूल्य, लक्ष्य, आदर्श की कल्पना नहीं की जा सकती जो पूर्णतया स्थिर हो। परिवर्तन तो प्रत्येक समाज में होता है। अपरिवर्तनशील समाज का वास्तविक अस्तित्व तो हो ही नहीं सकता। प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन की गति एक समान नहीं होती है। किन्हीं समाजों में यह परिवर्तन पर्याप्त द्रुत गति से होता है तो किन्हीं में मन्द गति से।

फिचर ने 'परिवर्तन' शब्द को समझाते हुए कहा है कि "परिवर्तन को संक्षिप्त रूप में पहले ही अवस्था या अस्तित्व की विधि में रूपान्तरण को कहते।" इसी अर्थ के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि समाज में पहले जो अवस्था थी, यदि उस अवस्था में कोई हेर-फेर या बदलाव दृष्टिगोचर होता है उसे सामाजिक परिवर्तन कहेंगे परन्तु यह अर्थ अत्यंत अस्पष्ट है, साथ ही संकुचित भी। वास्तव में सामाजिक परिवर्तन के अर्थ में विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं कुछ विद्वानों का कथन है कि जब सामाजिक ढांचे में कोई परिवर्तन हो जाता है तो उसे सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। दूसरे कुछ विद्वानों का मत है कि सामाजिक सम्बंधों में परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहना चाहिए। विशिष्ट अर्थ में, सामाजिक जीवन के किसी भी पक्ष में कोई भी परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन है। वास्तव में समाज का विश्लेषण अनेक विद्वानों ने अपने अलग-अलग रूप में किया है और उसी रूप में सामाजिक परिवर्तन की भी व्याख्या प्रस्तुत की जाती है क्योंकि सामाजिक परिवर्तन मोटे तौर पर समाज में या समाज के सदस्यों के जीवन में होने वाले परिवर्तनों को कहते हैं। यह बात विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित परिभाषाओं से और अधिक स्पष्ट हो जाएगी —

मॉरिस तथा एन्ड्रेज ने सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा करते हुए लिखा है कि, "ठोस अर्थ में सामाजिक परिवर्तन का अर्थ यह है कि समाज के अधिकतर व्यक्ति इस प्रकार के कार्यों को करने में लगे हैं जो उनके पहले के लोगों के कार्यों से भिन्न हैं। समाज प्रतिमानित मानवीय सम्बंधों का एक विशाल तथा जटिल जाल-सा है जिसमें समस्त मनुष्य अंश ग्रहण करते हैं। जब मानव-व्यवहार के रूपान्तरण की प्रक्रिया क्रियाशील होती है, तब हम उसी को दूसरे रूप में इस प्रकार कहते हैं कि सामाजिक परिवर्तन हो रहा है।"

प्रो० के० डेविस के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज के ढाँचे और प्रकार्यों में घटित होते हैं।"

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार, "समाजशास्त्री होने के नाते हमारी विशेष रुचि सामाजिक सम्बंधों से है। केवल इन सामाजिक सम्बंधों में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"

जोन्स ने लिखा है कि, "सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है जो सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अन्त:क्रियाओं या सामाजिक संगठन के किसी भी पक्ष में होने वाले बदलाव या रूपान्तरण को वर्णित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।"

जेनसन के मतानुसार, "सामाजिक परिवर्तन को लोगों के कार्य करने तथा विचार करने की पद्धतियों में रूपान्तरण कहकर परिभाषित किया जा सकता है।"

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन उस व्यवस्था में परिवर्तन को कहते हैं जिसके अन्तर्गत मानवीय सामाजिक अन्त: क्रियाएं व अन्त: सम्बंध संगठित, नियंत्रित और स्थिर रहते हैं।

समाप्त